सामान्य अध्ययन

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

CSE पाठ्यक्रम के अनुरूप

Powered by

Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

विषय-सूची

इकाई	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने के प्रमुख सिद्धांत	3-10
2	बीसवीं सदी की वैश्विक घटनाएँ तथा उनका वैश्विक प्रभाव	11-24
3	भारत की विदेश नीति तथा पड़ोसी देश	25-35
4	म्याँमार, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा मालदीव के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध	36-47
5	पाकिस्तान तथा चीन के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध	48-69
6	भारत की पूर्व की ओर देखो नीति तथा आसियान	70-86
7	भारत तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र (जापान, कोरिया गणराज्य तथा ऑस्ट्रेलिया)	87-94
8	भारत की हिंद महासागर क्षेत्र रणनीति	95-100
9	भारत-अमेरिका संबंध	101-108
10	भारत-रूस संबंध तथा यूक्रेन संकट	109-117
11	पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंध	118-128
12	भारत-यूरोपीय संघ संबंध	129-136
13	भारत-अफ्रीका संबंध	137-144
14	भारत-ब्राज़ील संबंध	145-147
15	प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठन	148-168

इकाई 1
अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने के प्रमुख सिद्धांत (Key Principles of Understanding International Relations)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने के प्रमुख सिद्धांत तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
  - यथार्थवाद
  - पारंपरिक यथार्थवादी दृष्टिकोण
  - आधुनिक या नव-यथार्थवाद
- प्रमुख यथार्थवादी विचारक एवं उनके विचार
  - मैकियावेली
  - थॉमस होब्स
  - ई.एच. कार
- हंस जे. मोर्गेंथाऊ वर्ष 1904-1980 यथार्थवाद की प्रमुख अवधारणाएँ
- उदारवाद एवं नव-उदारवाद
- उदारवादियों की 'विश्व व्यवस्था' एवं यथार्थवादियों की 'अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था' में प्रमुख अंतर
  - उदारवादी सिद्धांत
- वैश्वीकरण की अवधारणा
  - संचार का सिद्धांत
- मार्क्सवादी दृष्टिकोण
- साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद
- नव-उपनिवेशवाद का सिद्धांत
- नव-विप्लववादी दृष्टिकोण
  - केंद्र-परिधि का सिद्धांत
  - अल्पविकास का सिद्धांत
  - निर्भरता का सिद्धांत
- नारीवाद
  - विभेद नारीवाद
  - उदार नारीवाद
  - उत्तर-आधुनिक नारीवाद
- पर्यावरणवादी दृष्टिकोण

परिचय (Introduction)

राजनीति विज्ञान की एक शाखा के रूप में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति वैश्विक समुदाय में दो या दो से अधिक राष्ट्रों के आपसी संबंधों का अध्ययन है। संप्रभु राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक, कूटनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के आधार पर संबंधों का निर्धारण होता है। सैद्धांतिक स्तर पर, विभिन्न सिद्धांतों एवं अवधारणाओं के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की व्याख्या की जाती है। ऐसे सिद्धांतों में प्रमुख हैं- यथार्थवाद, नव-यथार्थवाद, उदारवाद, नव-उदारवाद, नारीवाद, पर्यावरणवाद इत्यादि।

यथार्थवाद (Realism)

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् यथार्थवादी सिद्धांत की सर्वमान्य समीक्षा हंस जे. मोर्गेंथाऊ ने प्रस्तुत की। इस विचारधारा के समर्थक अंतर्राष्ट्रीय राजनीति "जिस रूप में है उसका उसी रूप में अध्ययन" करने पर जोर देते हैं न कि आदर्शवादियों की भाँति कि 'विश्व कैसा होना चाहिए'। इनके मतानुसार मानवीय प्रकृति अधिकाधिक शक्ति हासिल करने की होती है अत: युद्ध एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह राज्यों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अभिकर्ता (Actory) के रूप में प्रस्तुत करता है क्योंकि सभी अन्य संस्थाएँ, जैसे- अंतर-सरकारी संगठन, बहुराष्ट्रीय निगम, विभिन्न गैर-राज्य अभिकर्ता (Non-state Actors) आदि संप्रभु राज्यों के अधीन होते हैं। अत: यह राज्य की सर्वोच्चता को स्वीकार करते हैं एवं राज्य से उच्चतर किसी को नहीं मानते। राष्ट्रों की मुख्य समस्या के रूप में ये "राष्ट्रीय हित" को प्रस्तुत करते हैं जिसे 'शक्ति' के द्वारा ही सुरक्षित रखा जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय अराजकता वाली व्यवस्था से पर्दा उठाकर; यह शक्तिसंपन्न राष्ट्रों के मध्य प्रभुत्व एवं सुरक्षा के लिए होने वाले संघर्ष के आधार पर पदसोपानिक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की तरफ इशारा करता है; जिसमें सबसे शक्तिशाली सर्वाधिक श्रेष्ठ होता है। अध्ययन की सुविधानुसार यथार्थवादी सिद्धांत को मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया जाता है-

1. प्राचीन/पारंपरिक/शास्त्रीय यथार्थवाद,
2. समकालीन/आधुनिक/नव-यथार्थवाद/संरचनात्मक यथार्थवाद।

पारंपरिक यथार्थवादी दृष्टिकोण (Traditional realist view)

- इसके समर्थकों में जहाँ एक तरफ थ्युसीडायिड्स, मैकियावेली, ई.एच. कार, मोर्गेंथाऊ जैसे पाश्चात्य विचारकों को शामिल किया जाता है, वहीं प्राचीन भारतीय विद्वान कौटिल्य 'शक्ति' को केंद्रबिंदु मानते हुए अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराते हैं। जहाँ कौटिल्य ने शक्ति को तीन तत्त्वों यथा ज्ञान, सैन्य शक्ति और शौर्य के रूप में निरूपित कर केवल अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अराजकता को स्वीकार करते हैं, वहीं मोर्गेंथाऊ भी शक्ति की अवधारणा को नैतिकता से पूरी तरह अलग किए जाने की वकालत करते हैं। मैकियावेली भी राज्य की शक्ति बनाए रखने का पक्षधर है। उसके अनुसार शासक उन सब नैतिकताओं का पालन नहीं किया जा सकता जो इंसान होने के नाते अच्छी मानी जाती हैं तथा थ्युसीडायिड्स भी नैतिकता और न्याय के सिद्धांतों के बीच भेद करने की पूरी कोशिश करता है। निष्कर्षत: पारंपरिक यथार्थवादी दृष्टिकोण मानवीय स्वभाव का

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 2

बीसवीं सदी की वैश्विक घटनाएँ तथा उनका वैश्विक प्रभाव
(Global Events of the Twentieth Century and their Global Impact)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'बीसवीं सदी की वैश्विक घटनाएँ तथा उनका वैश्विक प्रभाव तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- प्रथम विश्वयुद्ध
- रूस की क्रांति
- राष्ट्रसंघ
  - राष्ट्रसंघ के प्रमुख कार्य
- द्वितीय विश्वयुद्ध
- शीतयुद्ध
  - शीतयुद्ध को विभिन्न चरणों में बाँटकर देखा जा सकता है
  - ट्रूमैन सिद्धांत
  - मार्शल योजना
  - बर्लिन की घेराबंदी
  - उत्तर-अटलांटिक संधि संगठन
  - चीनी क्रांति एवं कोरिया संकट
  - स्वेज़ संकट
- नव-स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में गुटनिरपेक्ष राज्यों की भूमिका
  - गुटनिरपेक्ष आंदोलन
  - शस्त्रों की होड़
  - क्यूबा का मिसाइल संकट
  - वियतनाम का संघर्ष
  - शीतयुद्ध के अंत की ओर
  - शीतयुद्ध के समय महाशक्तियों द्वारा की गई कुछ प्रमुख संधियाँ
  - नव-शीतयुद्ध
  - अफगानिस्तान संकट
  - शीतयुद्ध की समाप्ति
  - खाड़ी युद्ध एवं पूर्व-पश्चिम भूमिका
  - शीतयुद्धोत्तर वैश्विक समस्याएँ

प्रथम विश्वयुद्ध (First World War)

- प्रथम विश्वयुद्ध 28 जुलाई, 1914 को ऑस्ट्रिया एवं हंगरी द्वारा सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा किए जाने के साथ शुरू हुआ। दरअसल, इस युद्ध का तात्कालिक कारण ऑस्ट्रिया के युवराज फ्रैंज़ फर्डीनेंड (Franz Ferdinand) की बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में घूमते समय एक सर्बियाई नागरिक द्वारा 28 जून, 1914 को की गई हत्या को माना जाता है। हालाँकि इस हत्या से पूर्व दो गुट पहले ही बन चुके थे जिनमें से एक तरफ मित्र-राष्ट्र (Allied and Associated Powers) कहे जाने वाले देश फ्राँस, ब्रिटेन, रूस थे; तो दूसरा गुट केंद्रीय शक्तियाँ (Central Powers) कहलाने वाले जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी जैसे देश थे।
- इस घटना के उत्तरदायी कारकों में शामिल अन्य घटानाक्रम थे– त्रिगुट संधि व्यवस्था, अफ्रीका एवं एशिया में औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता, सामरिक प्रतिस्पर्द्धा एवं ब्रिटेन तथा जर्मनी के बीच आर्थिक घेराबंदी, जर्मनी का ऑस्ट्रिया एवं रूस द्वारा सर्बिया का समर्थन, उग्र-राष्ट्रवाद, सैन्यवाद, अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव, समाचार-पत्रों की भूमिका आदि। प्राय: यह एक यूरोपीय युद्ध ही था जो शीघ्र ही अन्य देशों के शामिल होने से विश्वयुद्ध में परिवर्तित हो गया। जैसे मित्र-राष्ट्रों के समूह में वर्ष 1915 में इटली, अप्रैल 1917 में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा केंद्रीय शक्तियाँ कहलाने वाले देशों में तुर्की साम्राज्य का शामिल होना इस महायुद्ध की व्यापकता को प्रदर्शित करता है। इस ऐतिहासिक घटना के कारण वैश्विक जनसमुदाय ने पहली बार यह खुलकर माना की अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मुख्य समस्या युद्ध (War) ही है अत: अब चुनौती सिर्फ शांति स्थापना की नहीं बल्कि ऐसी शांतिपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण की भी थी जो भविष्य के सभी विवादों को सुलझाने में सफल हो सके। इस आवश्यकता ने वैश्विक नीति-निर्माताओं को वर्साय में एकत्रित होने के लिए प्रेरित किया ताकि ऐसे सिद्धांतों को प्रस्तुत किया जा सके जिसके द्वारा विश्व में शांति की पुनर्बहाली हो पाए। युद्धोपरांत अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन (Woodrow Wilson) के 'चौदह सूत्रीय कार्यक्रम' एवं 'राष्ट्र संघ' की स्थापना में योगदान उदारवादी आदर्शवाद के रूप में देखा जा सकता है।
- वर्ष 1919 में हुई वर्साय की संधि (Treaty of Versailles) में 15 अध्याय एवं 493 धाराएँ थीं जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं विवादास्पद थी। इसके प्रथम भाग में राष्ट्र संघ की प्रसंविदा (Covenant of the League of Nations) को शामिल किया गया था बाँकी अन्य अध्यायों में शांति संबंधी प्रावधान थें। जर्मन प्रतिनिधिमंडल द्वारा 'आरोपित शांति' (Dictated Peace) कहकर इसकी आलोचना की गई क्योंकि संधि का प्रारूप तैयार करते समय जर्मन प्रतिनिधियों से कभी कोई परामर्श नहीं किया गया। जर्मनी ने विल्सन के चौदह सूत्रीय कार्यक्रम के आधार पर आत्मसमर्पण किया था क्योंकि उस कार्यक्रम के अनुसार शांति की स्थापना की जानी थी एवं शस्त्रास्त्रों में कमी कर इसे केवल रक्षात्मक स्तर तक ले आना था। लेकिन विल्सन के इन आदर्शों की खुलकर अवहेलना हुई क्योंकि इनके चौदह सूत्रों का प्रयोग केवल जर्मनी के विरुद्ध ही किया गया, मित्र-राष्ट्रों द्वारा उन सिद्धांतों की कोई चिंता नहीं की गई। इस संधि के माध्यम से जर्मनी पर आरोपित आर्थिक प्रावधान (क्षतिपूर्ति संबंधी) की निंदा करते हुए तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 3	भारत की विदेश नीति तथा पड़ोसी देश (India's Foreign Policy and Neighboring Countries)

भारत की विदेश नीति तथा पड़ोसी देश
(India's Foreign Policy and Neighboring Countries)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत की विदेश नीति तथा पड़ोसी देश तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- विदेश नीति
  - ➤ भारत की विदेश नीति
- भारतीय विदेश नीति का विकास
  - ➤ भारतीय विदेश नीति के आधारभूत सिद्धांत
  - ➤ चीन के साथ भारत की असफलता 1962
- गुटनिरपेक्षता
- भारतीय विदेश नीति की बदलती प्रवृत्ति
- भारत एवं पड़ोसी राष्ट्र
  - ➤ भारत-नेपाल संबंध
  - ➤ हालिया घटनाक्रम तथा भारत के लिए संभावित रास्ते
  - ➤ भारत और भूटान

विदेश नीति (Foreign Policy)

विदेश नीति का निर्धारण किसी राष्ट्र के 'राष्ट्रीय हितों' को ध्यान में रखकर किया जाता है जो प्रायः उसकी भू-राजनीतिक स्थिति एवं ऐतिहासिक अनुभव से प्रभावित होता है। राष्ट्रीय हित समय-समय पर परिवर्तित होते रह सकते हैं लेकिन इसके मूल में राष्ट्रीय सुरक्षा, समृद्धि, विकास, राजनीतिक प्रभुता आदि जैसे मुद्दे विद्यमान रहते हैं। उग्र यथार्थवादी राष्ट्रीय हित को 'राष्ट्रीय शक्ति' तथा उग्र आदर्शवादी इसे 'शाश्वत शांति या मानवीय भाईचारे' के साथ अंतर्संबंधित करते हैं। संक्षेप में, विदेश नीति किसी राष्ट्र का अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध बनाने एवं उसे निरंतर बनाए रखने के लिए एक राष्ट्रीय प्रयास है।

भारत की विदेश नीति (India's Foreign Policy)

- भारतीय संकृति ने संचित सामर्थ्य के साथ अपनी मिश्रित संस्कृति एवं बौद्धिक व आध्यात्मिक गतिविधियों द्वारा वैश्विक समुदाय को प्रभावित किया है। भारत शांति का संदेश बुद्ध के काल से देता आया है। सम्राट अशोक व शहंशाह अकबर की नीतियाँ भी शांति पोशक व शंतिवर्धक ही रहीं। महात्मा गांधी ने भी अपने अहिंसक सत्याग्रह द्वारा इस परंपरा को पुष्ट किया। अतः अंतर्राष्ट्रीयता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व भारतीय इतिहास की एक अद्वितीय विशेषता रही है।
- भारत की भौगोलिक स्थिति, इतिहास, घरेलू वातावरण, डायस्पोरा, राष्ट्रीय दार्शनिकता, सैन्य सामर्थ्य,आर्थिक विकास, राष्ट्रीय संगठनों की मांगें इत्यादि कारक विदेश नीति को आकार प्रदान करते हैं।
- **भूगोल (Geography)**– देश का आकार उसकी अवस्थिति, प्राकृतिक संसाधन, जनसंख्या आदि ऐसे निर्णायक तत्त्व होते हैं जो अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में किसी देश की शक्ति को निर्धारित कर विदेश नीति को दिशा प्रदान करते हैं। हिंद महासागर में भारत की महत्त्वपूर्ण स्थिति भारत को वैश्विक महत्त्व की भूमिका निभाने में सहायता प्रदान करती है। भारत का विशाल आकार एवं विशाल आबादी इसकी राष्ट्रीय शक्ति का प्रमुख स्रोत है।
- **सैन्य शक्ति (Military Strength)**– सैन्य शक्ति विभिन्न राजनीतिक लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक होते हैं, जैसे- राज्य की सुरक्षा, संप्रभुता एवं प्रादेशिक अखंडता की रक्षा तथा विदेश नीति को बल प्रदान करना। भारत के पास विश्व की चौथी सबसे बड़ी सेना है जो सीमाओं की सुरक्षा के साथ-साथ देश की शासन प्रणाली को आधार भी प्रदान करता है। भारत का कुल सैन्य सामर्थ्य अभी पड़ोसी देश चीन के बराबर नहीं है और चीन के साथ भारत का सीमा विवाद चलता रहता है। भारत का विवाद पाकिस्तान के साथ भी है लेकिन वहाँ पाकिस्तान की तुलना में भारत की सैन्य क्षमता कहीं अधिक है। यद्यपि 'परमाणु संपन्न राज्य' की स्थिति सभी विद्रोही शक्तियों से भय निवारण का साधन है लेकिन यह एक विश्वसनीय साधन नहीं है क्योंकि इसकी व्यापक विभीषिका से मानवीयता का विनाश हो जाएगा ऐसे में देशों के मध्य विश्वास निर्माण के उपायों को खोजने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- **आर्थिक विकास (Economic Development)**– किसी भी देश के आर्थिक विकास की आवश्यकताएँ उसके विदेश नीति को प्रभावित करती है। भूमंडलीयकरण के इस दौर में प्रायः अधिकांश राज्य प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और विदेश व्यापार को विस्तारित कर अपना आर्थिक विकास सुनिश्चित करना चाहते हैं। शीतयुद्धोत्तर काल में भारत ने अपनी आर्थिक सहायता सुनिश्चित करने के लिए गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति अपनाई और अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को क्रियान्वित किया। आज भारत तेज़ी से आर्थिक विकास करते हुए सभी पड़ोसियों एवं बड़ी शक्तियों के साथ अपने संबंधों को विस्तार देने में लगा हुआ है। इस तरह आर्थिक विकास भारत की विदेश नीति का प्रमुख अंग बन गया है।
- **डायस्पोरा (Diaspora)**– डायस्पोरा (देशांतरण या प्रवसन) शब्दावली का प्रयोग उस संदर्भ में किया जाता है जब किसी देश के नागरिक अथवा वंशज प्रवास कर जाते हैं अर्थात् किसी अन्य देश की नागरिकता लेकर (बिना नागरिक हुए भी) रहते हैं तथा

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 4

म्याँमार, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा मालदीव के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध
(India's Bilateral Relations with Myanmmar, Bangladesh, Sri Lanka and Maldives)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'म्याँमार, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा मालदीव के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

भारत-म्याँमार संबंध
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- हालिया घटनाक्रम
- भारत के लिए म्याँमार का रणनीतिक महत्त्व
- भारत-म्याँमार सहयोग
- भारत व म्याँमार के संबंधों में चुनौतियाँ

भारत-बांग्लादेश संबंध
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- द्विपक्षीय संबंधों का ऐतिहासिक विकासक्रम
- भारत-बांग्लादेश के मध्य सहयोग के क्षेत्र
  - भूमि सीमा समझौता
  - भारत-बांग्लादेश के मध्य समुद्री सीमा विवाद
  - सुरक्षा
  - द्विपक्षीय व्यापार तथा निवेश
  - बेहतर कनेक्टिविटी के प्रयास
  - सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-बांग्लादेश संबंधों में चुनौतियाँ

भारत-श्रीलंका संबंध
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- नृजातीय मुद्दा
- भारत-श्रीलंका संबंधों के बीच विवाद के प्रमुख मुद्दे
- भारत-श्रीलंका सहयोग के क्षेत्र
  - विकासात्मक सहयोग
  - आर्थिक सहयोग तथा व्यापार
  - सांस्कृतिक तथा शैक्षिक संबंध
  - रक्षा संबंध
  - हालिया घटनाक्रम
- भारतीय संदर्भ में श्रीलंका का महत्त्व
- श्रीलंका में आर्थिक संकट
  - हालिया संदर्भ
  - पृष्ठभूमि
  - श्रीलंका के वर्तमान आर्थिक संकट के प्रमुख कारण
  - भारत की स्थिति

भारत-मालदीव संबंध
- पृष्ठभूमि
- भारत के लिए मालदीव का भू-सामरिक महत्त्व
- भारत और मालदीव के बीच सहयोग
  - आर्थिक व विकास सहयोग
  - क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण
  - सुरक्षा

भारत-म्याँमार संबंध (India–Myanmar Relations)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- भारत के पड़ोसियों में पूर्वोत्तर सीमांत पर स्थित म्याँमार (बर्मा) घने जंगलों से आच्छदित एक संप्रभु राष्ट्र है। भारत के चार उत्तर-पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर तथा मिज़ोरम; म्याँमार के साथ अपनी सीमा साझा करते हैं। इसके अलावा यह एकमात्र ASEAN देश है जो भारत के साथ सीमा बनाता है तथा भारत के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वार को खोलता है।
- म्याँमार भी श्रीलंका की तरह सदियों से भारतीय धर्म एवं संस्कृति से प्रभावित रहा है। वहाँ के समाज में बौद्धभिक्षु हमेशा से प्रतिष्ठित व सम्मानित रहे हैं क्योंकि म्याँमार की बहुसंख्य जनता बौद्ध मतानुयायी रही है। भारत-म्याँमार संबंधों की औपचारिक शुरुआत वर्ष 1951 की मैत्री संधि के माध्यम से हुई।
- म्याँमार भी भारत की तरह एक ब्रिटिश उपनिवेश था। औपनिवेशिक काल में व्यापक पैमाने पर भारतीय श्रमिक, अध्यापक, वकील, डॉक्टर व अन्य छोटे-बड़े प्रशासनिक अधिकारी म्याँमार ले जाए गए। इसी क्रम में बंगाल और तमिलनाडु से पहुँचने वाले प्रवासी भारतीय उद्यमियों की संख्या बढ़ती रही क्योंकि म्याँमार के मूल निवासियों की बहुत महत्त्वाकांक्षाएँ नहीं रहती थीं।
- म्याँमार के लोग अंग्रेज़ों को आक्रामकशक्ति समझते थे, ऐसे में अंग्रेज़ी प्रशासन में भारतीयों की हिस्सेदारी निश्चित रूप से भारत को संदेह के घेरे में खड़ा करती थी। धीरे-धीरे म्याँमार आने वाले भारतीयों ने उनके बाज़ार में अपनी स्थिति मज़बूत कर ली जिससे एजेंटों की भूमिका निभाने वाले कुछ प्रवासी भारतीयों की छवि एक शोषक वर्ग की तरह हो गई जिसका उल्लेखनीय वर्णन प्रसिद्ध बांग्ला उपन्यासकार शरदचंद्र चट्टोपाध्याय ने भी अपने उपन्यास में किया।
- भारतीयों के लिए म्याँमार प्रायः एक भारतीय हिस्सा ही था क्योंकि दोनों ही ब्रिटिश उपनिवेश थे और एकसमान शासन व्यवस्था से संचालित हो रहे थे। वर्ष 1937 तक यह ब्रिटिश भारत के एक प्रांत के रूप में प्रशासित होता रहा। ब्रिटिश काल में भारतीय कैदियों को दंडस्वरूप देश निकाला के रूप में म्याँमार के मांडले जेल भेज दिया जाता था। ऐसे प्रमुख कैदियों में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का नाम उल्लेखनीय है।
- भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में म्याँमार के प्रवेश का समर्थन किया तथा शीतयुद्ध जनित तनावों को कम करने के लिए गुटनिरपेक्षता की नीति को भी प्रस्तावित किया। चीन के साथ म्याँमार की सीमा तथा चीन में साम्यवादी क्रांति की सफलता ने निश्चित रूप से म्याँमार को आशंकित किया। अतः चीनी भय से बचने के लिए चीन की नई सरकार को म्याँमार ने सबसे पहले मान्यता प्रदान किया।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 5

पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन और ताइवान के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध
(India's bilateral relations with Pakistan, Afghanistan, China and Taiwan)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन और ताइवान के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

भारत-पाकिस्तान संबंध
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- भारत तथा पाकिस्तान के बीच संबंधों में तनाव के मुद्दें
  - प्रमुख विवादित क्षेत्र
  - चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा
  - भारत-पाक संबंधों में चीन की भूमिका
  - कुलभूषण जाधव मुद्दा
  - भारत-पाकिस्तान आर्थिक संबंध

भारत-अफगानिस्तान संबंध
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - हालिया घटनाक्रम
  - कनेक्टिविटी
  - भारत तथा अफगानिस्तान के बीच सहयोग के अन्य क्षेत्र
  - मानवीय सहायता
  - वाणिज्यिक संबंध

भारत-चीन संबंध
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- भारत तथा चीन के मध्य सहयोग के क्षेत्र
  - भारत-चीन सांस्कृतिक संबंध
  - व्यापार और अर्थव्यवस्था
- चीन का BRI/OBOR प्रोजेक्ट एवं भारतीय निहितार्थ
- चीन की नीतियों पर विश्व के प्रमुख देशो की स्थिति
- भारत-चीन बहुपक्षीय जुड़ाव
- भारत तथा चीन के बीच विवाद के प्रमुख मुद्दे
  - दलाई लामा तथा तिब्बत का मुद्दा
- सीमा विवाद
  - प्रमुख विवादित क्षेत्र
  - डोकलाम विवाद, 2017
  - गलवान घाटी मुद्दा
- भारत-चीन जल विवाद
- भू-सामरिक प्रतिस्पर्द्धा

भारत-ताइवान संबंध
- भारत-ताइवान संबंधों के बारे में
  - संबंधों में हालिया घटनाक्रम
  - भारत-ताइवान संबंधों में चुनौतियाँ
  - संबंधित तथ्य

भारत-पाकिस्तान संबंध (India-Pakistan Relations)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

- पाकिस्तान प्रस्ताव को अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन (मार्च 1940) में पारित किया गया जिसके बाद वर्ष 1947 में ब्रिटिश संसद द्वारा पारित कानून के माध्यम से दो स्वतंत्र देश भारत तथा पाकिस्तान अस्तित्व में आए।
- दरअसल, भारत से पाकिस्तान का विभाजन धार्मिक आधार पर किया गया जिसमें आधुनिक बांग्लादेश (पूर्वी पाकिस्तान) भी शामिल था।
- भारत की विदेश नीति के लिए पाकिस्तान के साथ अच्छे संबंध बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। स्वाधीनता और विभाजन के पहले ही सरहद के दोनों ओर सांप्रदायिक उन्माद का ज्वार भयंकर उबाल पर आ चुका था।
- विभाजन के उपरांत जगह-जगह दंगों की आग में मासूम लोग जलते रहें; भारत से पाकिस्तान पहुँचने वाले तथा पाकिस्तान से भारत आने वाले शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या विकट रूप ले चुकी थी।
- विभाजनकारी परिणामों की पीड़ा इतनी ज़्यादा थी कि इन दंगों में हज़ारों जाने गई, करोड़ों बेघर हुए जिसका दीर्घकालिक परिणाम दोनों देशों के संबंधों में दिखता है।
- भारत-पाकिस्तान विभाजन के उपरांत देशी रियासतों का भविष्य उन्हीं पर छोड़ दिया गया, उनको अधिकार था कि वो भारत में या पाकिस्तान में या फिर स्वतंत्र अस्तित्व के साथ रह सकती है।
- भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए 562 देशी रियासतों का विलय भारत में करा लिया, लेकिन कुछ रियासतों के विलय पर बातचीत चल रही थी। भारत तथा पाकिस्तान की सीमा पर जम्मू और कश्मीर ऐसी ही देशी रियासत थीं जिसने विलय संबंधी कोई निर्णय नहीं लिया था।
- जम्मू और कश्मीर राज्य की अधिकांश आबादी मुस्लिम समुदाय और शासक महाराजा हरि सिंह हिंदू समुदाय के थे। महाराजा जम्मू और कश्मीर रियासत को एक स्वतंत्र देश के रूप में रखना चाहते थे।
- इसी बीच पाकिस्तान ने 22 अक्तूबर, 1947 में जम्मू और कश्मीर की इस स्थिति का फायदा उठाने का प्रयास किया तथा अपने सहयोग और समर्थन से जम्मू और कश्मीर पर कबायली आक्रमण शुरू कर दिए। हालाँकि, पाकिस्तान ने महाराजा से पाकिस्तान में विलय संबंधी प्रयास किया था किंतु, महाराजा ने पाकिस्तान में विलय से मना कर दिया।
- पाकिस्तान समर्थित कबायली आक्रमण के बाद महाराजा हरि सिंह ने जम्मू और कश्मीर का विलय भारत के साथ करने का निर्णय

Copyright @ Sanskriti IAS

- पाकिस्तानी दावा है कि वर्ष 1914 में तत्कालीन सिंध सरकार तथा कच्छ के महाराज के बीच हस्ताक्षरित 'बंबई सरकार संकल्प' (Bombay Government Resolution) की धारा 9 तथा 10 के तहत संपूर्ण क्रीक क्षेत्र पर उसका अधिकार है।
- पाकिस्तान के दावे का खंडन करते हुए भारत तर्क देता है कि वर्ष 1925 में बनाए गए अन्य मानचित्र में दोनों देशों के बीच एक मध्य चैनल (Mid-Channel) को प्रदर्शित किया गया था जिसको उसी वर्ष (1925) में ही एक मिड-चैनल पिलर स्थापित कर कार्यान्वित किया गया था।
- सरक्रीक बहुत ही महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है इस क्षेत्र में समुद्र के नीचे प्रचुर मात्रा में तेल व गैस का संभावित संकेंद्रण है तथा यह दोनों देशों के सैकड़ों मछुआरों के लिए मछली पकड़ने का बड़ा स्थान भी है। नवंबर 2008 में मुंबई आतंकी हमलों के बाद से इस क्षेत्र ने भारत के लिए समुद्री सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बढ़ा दी हैं। ऐसे में यदि कोई देश किसी अन्य देश की पारंपरिक अवस्थिति को स्वीकार कर लेता है तो उसे एक एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक ज़ोन-EEZ से हाथ धोना पड़ जाएगा।

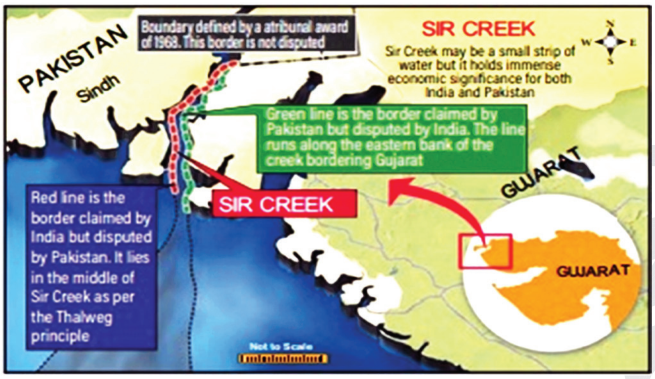

सियाचिन विवाद, 1984 (Siachen Issue, 1984)

- यह क्षेत्र हिमालय की काराकोरम रेंज के पाँच सबसे बड़े हिमनदों में सबसे बड़ा है। सामरिक रूप से भारत तथा पाकिस्तान के लिए यह स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह भारत तथा पाकिस्तान की सीमा के समीप स्थित है।
- वर्ष 1972 में हुए शिमला समझौते में सियाचिन के NJ 9842 बिंदु पर युद्ध-विराम की सीमा तय हो गई, जबकि इसके आगे के बारे में कोई बात नहीं कही गई। धीरे-धीरे इस बिंदु से आगे के क्षेत्र में गतिविधियाँ बढ़ने लगी तथा पाकिस्तान द्वारा कुछ पर्वतारोही दलों को जाने की अनुमति भी दे दिया गया जिससे दोनों देशों के संबंधों में तनाव उत्पन्न हुआ। इस तरह जब पाकिस्तान द्वारा इस क्षेत्र पर नियंत्रण करने का प्रयास किया गया तो भारत ने 'ऑपरेशन मेघदूत' के द्वारा इस पर नियंत्रण कर लिया।
- सियाचिन रणनीतिक रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण स्थल है क्योंकि यह विश्व का सबसे ऊँचा युद्धस्थल है। इस पर भारत की पहुँच निश्चित रूप से भारत को सामरिक मज़बूती प्रदान करती है। यहाँ से लेह, लद्दाख तथा चीन के कुछ हिस्सों में नज़र रखी जा सकती है।
- **भारत तथा पाकिस्तान के दावे–** इस विस्तृत हिमाच्छादित क्षेत्र पर दोनों पक्ष अपना नियंत्रण चाहते हैं इसलिए 'हिमनदों के उत्तर' वाक्यांश का प्रायः भिन्न-भिन्न अर्थ निकाल लिया जाता है। पाकिस्तान के अनुसार, रेखा NJ 9842 से सीधे चीन-भारत सीमा पर काराकोरम तक जाना चाहिए जबकि; भारत के अनुसार, रेखा NJ 9842 से उत्तर की ओर साल्टेरो रेंज के साथ-साथ चीन सीमा तक जाना चाहिए।

चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (The China-Pakistan Economic Corridor)

CPEC, चीन तथा पाकिस्तान के बीच एक द्विपक्षीय समझौता है जो मुख्यतः चीन की OBOR/BRI (बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव परियोजना) का हिस्सा है।

- CPEC परियोजना में रेलमार्ग, राजमर्ग, जलमार्ग तथा पाइपलाइन सहित अनेक अवसंरचना निर्माण परियोजनाएँ शामिल हैं जिसके माध्यम से चीन के झिंजियांग प्रांत के कासगर को पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत के ग्वादर बंदरगाह (पोर्ट) से जोड़ा जाएगा।
- यह चीन के लिए ग्वादर पोर्ट से मध्य पूर्व और अफ्रीका तक पहुँच का मार्ग सुनिश्चित करेगा। भारत द्वारा CPEC पहल की गंभीर आलोचना की जाती है क्योंकि यह परियोजना पाक-अधिकृत कश्मीर से होकर गुज़रती है, जो कि भारत तथा पाकिस्तान के बीच विवाद का क्षेत्र है।
- एक संभावना यह भी है कि अमेरिकी बलों द्वारा अफगानिस्तान छोड़ने पर चीन का दबदबा बढ़ेगा और अफगानिस्तान के CPEC पहल में शामिल होने से भारत द्वारा ईरान में निर्मित किए जा रहे चाबहार बंदरगाह जैसी परियोजनाएँ अधर में लटक सकती हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 6

भारत की पूर्व की ओर देखो नीति तथा आसियान
(India's Look East Policy and ASEAN)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत की पूर्व की ओर देखो नीति तथा आसियान तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- भारत की "पूर्व की ओर देखो नीति"
- आसियान
  - ➤ आसियान के नेतृत्व वाले मंच
  - ➤ आसियान के उद्देश्य
  - ➤ आसियान के समक्ष चुनौतियाँ
- भारत तथा आसियान
  - ➤ भारत-आसियान आर्थिक सहयोग
  - ➤ भारत तथा आसियान के बीच सुरक्षा के पहलू
  - ➤ सुरक्षात्मक मुद्दों के लिए किए जा रहे प्रयास
- दक्षिण चीन सागर
  - ➤ दक्षिण चीन सागर में भारत के हित
  - ➤ भारत के लिए दक्षिण चीन सागर में आगे की रणनीति
- भारत और वियतनाम संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ भारत तथा वियतनाम के बीच सहयोग के क्षेत्र
- भारत तथा सिंगापुर संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ वाणिज्यिक संबंध
  - ➤ सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत थाईलैंड संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ द्विपक्षीय संस्थागत तंत्र
  - ➤ आर्थिक और वाणिज्यिक साझेदारी
- भारत तथा फिलीपींस संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ व्यापार एवं वाणिज्य
  - ➤ निवेश के क्षेत्र
- भारत तथा मलेशिया संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ भारत-मलेशिया वाणिज्य संबंध
  - ➤ निवेश के क्षेत्र
- भारत-ब्रुनेई संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ भारत-ब्रुनेई द्विपक्षीय व्यापार
- भारत-कंबोडिया द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ वाणिज्यिक संबंध
  - ➤ सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-लाओस द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ भारत और लाओस के बीच द्विपक्षीय व्यापार
  - ➤ भारत तथा लाओस के बीच सहयोग का क्षेत्र
- भारत-इंडोनेशिया द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ सांस्कृतिक संबंध
  - ➤ वाणिज्यिक संबंध
  - ➤ सहयोग के अन्य क्षेत्र

भारत की "पूर्व की ओर देखो नीति"
(India's Look East Policy)

- 'पूर्व की ओर देखो नीति' भारत की विदेश नीति को महत्त्वपूर्ण दिशा प्रदान करती है, जो इसके पूर्वी पड़ोसियों के साथ संबंधों का निर्धारण करती है। भारत की इस नीति के लिए एक शक्तिशाली आर्थिक औचित्य है। अनेक कारणों ने भारत को 1991 में आर्थिक सुधार करने के लिए प्रेरित किया जैसे– भारत के मज़बूत आर्थिक भागीदार सोवियत संघ का पतन, भारत का आर्थिक संकट तथा वैश्वीकरण की अनिवार्यता जैसे तत्त्व इत्यादि।
- इस तरह भारत के लिए अब आवश्यक था कि वह गतिशील (Association of South East Asian Nations– ASEAN) क्षेत्र से जुड़ जाए जो वैश्विक स्तर पर विकास की दिशा में तेजी से अग्रसर हो रहा था। विश्व व्यापार वार्ता के दोहा दौर की असफलता तथा एशिया में क्षेत्रीय व्यापार संस्थाओं के उत्थान ने भारत को इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।
- ज्यादातर दक्षिण–पूर्व एशियाई देश कभी न कभी कुछ हद तक भारतीय सभ्यता के प्रभाव में रह चुके हैं; व्यापार के अलावा भारत बौद्ध धर्म तथा हिंदू धर्म, संस्कृत भाषा, साहित्य, कला, स्थापत्य,

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 7

भारत तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र (जापान, कोरिया गणराज्य तथा ऑस्ट्रेलिया)
(India and the Indo-Pacific Region (Japan, Republic of Korea and Australia)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र (जापान, कोरिया गणराज्य तथा ऑस्ट्रेलिया) तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
  - भारत-प्रशांत द्वीपीय राष्ट्र
  - भारत के लिए संभावनाएँ
  - भारत-प्रशांत क्षेत्र में देशों के लिए नीतिगत सुझाव
- भारत-जापान संबंध
  - भारत-जापान संबंधों में उतार-चढ़ाव का दौर
  - आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध
  - निवेश
  - रक्षा संबंध
  - भारत-जापान डिजिटल साझेदारी और स्टार्ट-अप हब
  - सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-कोरिया गणराज्य द्विपक्षीय संबंध
  - वाणिज्यिक संबंध
  - सांस्कृतिक संबंध
  - सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध
  - आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध
  - विज्ञान और प्रौद्योगिकी
  - सहयोग के अन्य क्षेत्र

परिचय (Introduction)

- एक नए भौगोलिक स्थान के रूप में हिंद-प्रशांत का उदय भारतीय और प्रशांत महासागरों को एक-साथ लाना 21वीं सदी की नई रणनीतिक वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है।
- वैश्वीकरण, व्यापार निर्भरता, समुद्री क्षेत्र की निर्बाध कनेक्टिविटी और समुद्री खतरे की बदलती प्रकृति ने देशों की भौतिक सीमाओं को धुंधला कर दिया है। ऐसे में व्यापार और सुरक्षित समुद्र सुनिश्चित करने के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ी है।
- इंडो-पैसिफिक निर्माण का अर्थ अमेरिका के लिए यह भारत के पश्चिमी तट तक फैला हुआ है जो यूएस इंडो-पैसिफिक कमांड की भौगोलिक सीमा भी है, जबकि भारत के लिए इसमें संपूर्ण हिंद महासागर और पश्चिमी प्रशांत शामिल हैं।
- 'भारत-प्रशांत' शब्द का प्रयोग समुद्री जैव वैज्ञानिकों व मत्स्य विज्ञानियों द्वारा उष्णकटिबंधीय हिंद महासगर से लेकर इंडोनेशियाई द्वीपसमूह के इर्द-गिर्द के विषुवतरेखीय समुद्र, पश्चिमी व मध्य प्रशांत महासागर तथा दक्षिण चीन सागर तक के जल के विस्तारित क्षेत्र को परिभाषित करने के लिए किया गया।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने (शांगरीला डायलॉग में) भाषण में स्पष्ट रूप से अफ्रीका से अमेरिका तक 'भारत-प्रशांत' (Indo-Pacific) के भारत के विचार की भौगोलिक पहुँच का संकेत दिया था, जो जापान के साथ मिलकर भारतीय और प्रशांत महासागर दोनों को कवर करता है।
- प्रधानमंत्री ने अपने भाषण के दौरान कुछ प्रमुख पहलुओं पर भी ज़ोर दिया था जो इंडो-पैसिफिक पर भारत के नीतिगत परिप्रेक्ष्य को दर्शाते हैं, जिसमें "समावेशीता" (inclusiveness), "खुलापन" (openness), "आसियान केंद्रीयता" (ASEAN centrality) शामिल है और यह अवधारणा किसी भी देश के खिलाफ निर्देशित नहीं थी।

भारत-प्रशांत द्वीपीय राष्ट्र (Indo-Pacific Island Countries)

- हाल के वर्षों में भारत का ध्यान पूर्व के क्षेत्रों से होकर प्रशांत महासागर तक विस्तारित हो चुका है। भारतीय मूल की बड़ी आबादी वाले राष्ट्र फिजी के साथ भारत का निकट संबंध है।
- वर्ष 2016 में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने पापुआ न्यू गिनी (PNG) और न्यूज़ीलैंड की यात्रा की तथा भारत की विस्तारित 'एक्ट ईस्ट नीति' के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ।
- भारत प्रशांत द्वीपसमूह सहयोग मंच (Foram For India-Pacific Islands Cooperation : FIPIC) संबंधी पहल प्रशांत क्षेत्र में भारत के गंभीर प्रयास के रूप में देखा जा सकता है जिसकी शुरुआत नवंबर 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के दौरान किया गया था।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 8 — भारत की हिंद महासागर क्षेत्र रणनीति (India's Indian Ocean Region Strategy)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत की हिंद महासागर क्षेत्र रणनीति तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
  - हिंद महासागर क्षेत्र का भू-रणनीतिक महत्त्व
  - हिंद महासागर की क्षेत्रीय विशेषता
  - भारत के समक्ष चुनौतियाँ
  - हिंद महासागर में चीन की बढ़ती भूमिका
  - चीन को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत के प्रयास
  - भारत द्वारा हिंद महासागर में किया जाने वाला अन्य महत्त्वपूर्ण प्रयास
- प्रमुख क्षेत्रीय संगठन
  - दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस)
  - भारत-बिम्सटेक
  - सहयोग के क्षेत्र
  - बिम्सटेक देशों के बीच परिवहन और संचार
  - बिम्सटेक के औपचारिक ढाँचे में नवीनतम कार्यक्रम

परिचय (Introduction)

- भारत के उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में हिंद महासागर की अवस्थिति इसे महत्त्वपूर्ण रणनीतिक अवस्थिति प्रदान करता है। हिंद महासागर विश्व के कुल महासागरीय क्षेत्रफल का लगभग पाँचवां भाग आच्छादित करता है।
- हिंद महासागर व्यापार, वाणिज्य और ऊर्जा के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। इसी स्थिति के कारण यह क्षेत्र आर्थिक विकास, विवादों, संघर्षों और क्षेत्रीय व बाहरी शक्तियों द्वारा क्षेत्रीय प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्द्धा का घर बन गया है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, यूनाइटेड किंगडम, भारत और चीन जैसी सभी प्रमुख शक्तियों ने हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) की सुरक्षा में हिस्सेदारी की मांग की है। शीतयुद्ध के दौरान सोवियत संघ IOR तक सीधी पहुँच चाहता था। अब चीन अपने वर्चस्व को इस क्षेत्र में बढ़ाना चाहता है।

हिंद महासागर क्षेत्र का भू-रणनीतिक महत्त्व (Geostrategic Importance of the IOR)

- हिंद महासागर, जो अफ्रीका, एशिया और ऑस्ट्रेलिया के चौराहे पर स्थित है, में कई समुद्र तट हैं जो इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- हिंद महासागर एक महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्ग है जिसमे होर्मुज़ जलडमरूमध्य, मलक्का जलडमरूमध्य, बाब-अल मंडेब आदि जैसे चोक बिंदु हैं और बड़ी मात्रा में व्यापार इनसे ही होकर होता है।
- हिंद महासागर दुनिया का सबसे व्यस्त व्यापार मार्ग होने के कारण एक धुरी बना हुआ है। दुनिया का लगभग 80 प्रतिशत समुद्री तेल व्यापार इस क्षेत्र से होता है।
- चीन की बढ़ती गतिविधियों ने विभिन्न तटवर्ती देशों को अपनी समुद्री रणनीतियों को फिर से आकार देने के लिए मजबूर किया है।
- हिंद महासागर मध्य पूर्व से तेल के परिवहन के लिए एक चौराहे के रूप में कार्य करता है। यही कारण है कि बाहरी ताकतें अपने पैर जमाने की कोशिश कर रही हैं, जिससे यह उनके लिए अपनी ताकत और क्षमता का प्रदर्शन करने वाला क्षेत्र बन गया है।
- इस क्षेत्र में अनेक मत्स्ययन क्षेत्र स्थित हैं जैसे जापान, रूस, दक्षिण कोरिया तथा ताईवान के क्षेत्र मुख्यत: झींगा व टूना मछली के लिए इस क्षेत्र का व्यापक प्रयोग किया जाता है
- विश्व के अपतटीय तेल उत्पादन का अनुमानत: 40-42% हिंद महासागर क्षेत्र से आता है
- भारत, इंडोनेशिया, श्रीलंका, थाईलैंड तथा दक्षिण अफ्रीका द्वारा भारी खनिजों से समृद्ध तटीय रेत व अपतटीय प्लेसर निक्षेपों का दोहन किया जाता है।

हिंद महासागर की क्षेत्रीय विशेषता (Regional feature of the Indian Ocean)

- हिंद महासागरीय क्षेत्र के आसपास का क्षेत्र लगभग 2.7 बिलियन लोगों का निवास स्थल है। तटवर्ती राज्यों और राष्ट्रों की सांस्कृतिक विविधता और भाषाओं, धर्मो, परंपराओं, कलाओं की अनोखी विशेषता वैश्विक पटल पर इस क्षेत्र की अलग छवि प्रस्तुत करती है।
- इस प्रकार की विविधता और भिन्नता के बावजूद ये छोटे-बड़े राज्य हिंद महासागर द्वारा एक-साथ बंधे हैं।
- एक तरफ जहाँ यह क्षेत्र व्यापार हेतु वैश्विक समुद्री मार्ग प्रदान कर देशों के विकास और समृद्धि को सुनिश्चित करता है तो वहीं कुछ कमज़ोर और शक्तिशाली देश अपने व्यक्तिगत स्वार्थों और लाभों के लिए इस क्षेत्र में व्यापक हस्तक्षेप करतें है।
- कमज़ोर देश जहाँ समुद्री डकैती जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं वहीं शक्ति संपन्न देश अपनी मज़बूत रणनीतिक पहुँच का फायदा उठाते हुए दूसरे के व्यापार को बाधित करने के लिए करतें है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 9	भारत–अमेरिका संबंध (India–U.S. Relations)

भारत–अमेरिका संबंध
(India–U.S. Relations)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत–अमेरिका संबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ अमेरिका-पाकिस्तान गठजोड़ और भारत
  - ➤ भारत-चीन युद्ध के बाद
  - ➤ हालिया घटनाक्रम
- भारत और अमेरिका के आर्थिक संबंध
  - ➤ निवेश
- भारत तथा अमेरिका के बीच सहयोग के क्षेत्र
  - ➤ विज्ञान और प्रौद्योगिकी (एस एंड टी)
  - ➤ साइबर सुरक्षा सहयोग
  - ➤ स्वास्थ्य सहयोग
  - ➤ कोविड-19 महामारी से निपटने में सहयोग
  - ➤ शिक्षा सहयोग
  - ➤ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन
  - ➤ रक्षा सहयोग
  - ➤ भारत और क्वाड
  - ➤ आतंकवाद-विरोधी सहयोग और आंतरिक सुरक्षा
  - ➤ असैन्य परमाणु सहयोग
  - ➤ सामरिक परामर्श
  - ➤ काउंटर-नारकोटिक्स सहयोग
- भारत और अमेरिका के बीच हस्ताक्षरित प्रमुख समझौते

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

- भारत-अमेरिका संबंध स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक सिद्धांतों, सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार, मानवाधिकारों और कानून के शासन के प्रति साझा प्रतिबद्धता पर आधारित है। दोनों देशों के व्यापार, निवेश और कनेक्टिविटी के माध्यम से वैश्विक सुरक्षा, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने में साझा हित हैं।
- भारतीय अमेरिकी, अमेरिका में सबसे सफल अप्रवासी समुदायों में से एक हैं और राजनीति सहित विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। भारतीय प्रवासी भारत और अमेरिका के बीच घनिष्ठ संबंधों को मज़बूत करने में उत्प्रेरक रहे हैं।
- भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंध एक "वैश्विक रणनीतिक साझेदारी" के रूप में विकसित हुए हैं, जो साझा लोकतांत्रिक मूल्यों तथा द्विपक्षीय, क्षेत्रीय व वैश्विक मुद्दों पर हितों के बढ़ते सहयोग पर आधारित है।
- भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO), G-20, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) क्षेत्रीय मंच, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन (WTO) सहित बहुपक्षीय संगठनों में निकटता से सहयोग करते हैं।
- भारत आसियान का संवाद भागीदार, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन का भागीदार तथा अमेरिकी राज्यों के संगठन का पर्यवेक्षक है। भारत हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) का भी सदस्य है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका एक संवाद भागीदार है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका यह सुनिश्चित करने के प्रयासों में एक प्रमुख वैश्विक शक्ति और महत्त्वपूर्ण भागीदार के रूप में भारत के उदय का समर्थन करता है कि इंडो-पैसिफिक शांति, स्थिरता और बढ़ती समृद्धि का क्षेत्र है।
- अमेरिका भारत के साथ अपने संबंधों को एशिया में दीर्घकालिक स्थिरता बनाए रखने और आतंकवाद से लड़ने के लिए केंद्रीय मानता है।
- भारत में अमेरिका की दिलचस्पी 1942 की शुरुआत में ही स्पष्ट हो गई थी। स्वतंत्रता के पाँच साल पहले जब राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने विंस्टन चर्चिल को सुझाव दिया था कि वह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करते हैं।
- स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री भारतीय विदेश नीति के प्राथमिक वास्तुकार जवाहरलाल नेहरू वैश्विक गुटबंदी से दूर रहने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने एक बीच का रास्ता चुना जिसे बाद में गुटनिरपेक्षता के रूप में जाना जाने लगा।
- जवाहरलाल नेहरू के तहत भारत ने पूर्व और पश्चिम के शक्ति गुटों के बीच सावधानीपूर्वक दूरी बनाए रखने की कोशिश करते हुए विश्व स्तर पर उन्मुख विदेश नीति अपनाया।
- नि:शस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद विरोधी तथा विश्व शांति पर भारत के रुख ने भारत के लिए एशिया और अफ्रीका के नए स्वतंत्र देशों का सम्मान जीता, इस बात से संतुष्टि हुई कि उनमें से एक (भारत) दो महान शक्तियों के साथ समान शर्तों पर बात कर सकता था।
- शीतयुद्ध की समाप्ति और भारत के आर्थिक सुधारों के साथ सोवियत संघ के पतन ने दोनों देशों के एक-दूसरे को समझने के तरीके में क्रमिक बदलाव की प्रक्रिया शुरू किया।
- 21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों में एक व्यावहारिक यथार्थवाद की विशेषता रही है। दोनों देशों के संबंधों को विभिन्न चरणों में बांटकर समझा जा सकता है जो इस प्रकार है-

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 10 भारत-रूस संबंध तथा यूक्रेन संकट (India–Russia Relations and Ukrain Crisis)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत-रूस संबंध तथा यूक्रेन संकट तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- पृष्ठभूमि
- सोवियत संघ के विघटन के बाद की दशाएँ
- भारत-रूस संबंधों का नया युग
  - ➤ व्यापार और आर्थिक संबंध
  - ➤ निवेश
  - ➤ रक्षा और सुरक्षा सहयोग
  - ➤ परमाणु ऊर्जा
  - ➤ अंतरिक्ष सहयोग
  - ➤ विज्ञान प्रौद्योगिकी
  - ➤ सांस्कृतिक सहयोग
- हालिया घटनाक्रम
  - ➤ यूक्रेन पर रूस का हमला
  - ➤ पृष्ठभूमि
- मिन्स्क समझौता
  - ➤ मिन्स्क समझौते की कमियाँ
- वर्तमान संघर्ष एवं उससे जुड़ी समस्याएँ
- रूस पर आरोपित प्रतिबंध
  - ➤ रूसी कंपनियों के वित्तीय सेवाओं पर प्रतिबंध
  - ➤ रूस की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
- अमेरिका तथा पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों का प्रभाव और भारत की स्थिति
- संयुक्त राज्य अमेरिका बनाम रूस के संदर्भ में भारत की स्थिति

पृष्ठभूमि (Background)

- रूस (पूर्व सोवियत संघ का उत्तराधिकारी) के साथ भारत का पारंपरिक रूप से घनिष्ठ व मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। वर्ष 1905 की रूसी क्रांति ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरित करने का कार्य किया।
- महात्मा गांधी जब दक्षिण अफ्रीका में थे तो उन्होंने रूस और भारत में मौजूद स्थितियों की अनुरूपता को पहचाना तथा लियो टालस्टॉय से करीबी रिश्ता बनाया व उनके साथ लंबे समय तक पत्राचार किया।
- वर्ष 1917 की रूस की बोल्शेविक क्रांति के बाद सोवियत नेताओं को यकीन होने लगा कि यदि भारत भी स्वतंत्र हो जाता है तो उनकी क्रांति की सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाएगी।
- बोल्शेविक क्रांति की दसवीं वर्षगाँठ पर वर्ष 1927 में जवाहरलाल नेहरू सोवियत संघ का दौरा करने के बाद भारत लौटे तथा सोवियत प्रभाव से काफी प्रभावित भी हुए।
- जवाहलाल नेहरू ने भारत जैसे विकासशील देश के लिए पूंजीवाद की अपेक्षा सामाजिक न्याय, समानता, बंधुत्व तथा मानवीय स्वतंत्रता व गरिमा पर बल दिया।
- जवाहरलाल नेहरू का सोवियत संघ में विश्वास उस वक्त सही साबित हुआ जब कश्मीर के मुद्दे पर सोवियत संघ ने भारत का खुलकर साथ दिया तथा भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करने वाले अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर द्विपक्षीय व अंतर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर भारत को राजनैतिक, कूटनीतिक तथा सामरिक समर्थन प्रदान किया।
- सोवियत कूटनीतिक समर्थन, सैन्य सहायता तथा भारत-रूस शांति, मैत्री और सहयोग संधि द्वारा प्रदत्त सामर्थ्य ने भारत को वर्ष 1971 में भारत-पाक युद्ध में विजयी बनाया तथा एक स्वतंत्र बांग्लादेश के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।
- 1950 के दशक की शुरुआत से ही भारत ने अपने औद्योगीकरण के लिए तथा रक्षा, अंतरिक्ष व परमाणु ऊर्जा के संवेदनशील क्षेत्रों में सोवियत संघ से बड़े पैमाने पर सहायता प्राप्त किया। बुनियादी ढाँचा परियोजना के लिए सस्ते ब्याज पर ऋण जिसका भुगतान भी रुपए में किया जाना था।
- BHEL, ONGC, HAL (हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड) जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को सोवियत सहयोग से ही स्थापित किया गया था। इसके अलावा किसी विदेशी सहयोग से निर्मित होने वाला पहला भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान IIT मुंबई है।

सोवियत संघ के विघटन के बाद की दशाएँ (Conditions After the Dissolution of the Soviet Union)

- सोवियत संघ के विघटन के उपरांत दोनों पक्षों ने नई वास्तविकताओं को समायोजित करने का प्रयास किया दोनों की अलग-अलग प्राथमिकताओं के कारण 1990 के दशक में दोनों पक्षों के बीच दूरियाँ बढ़ी।
- भारत ने आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया शुरू किया तथा रूस राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था से मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था व केंद्रीकृत शासन से बहुदलीय लोकतंत्र की तरफ बढ़ा जो उसके लिए बहुत ही कष्टदायी और संघर्षपूर्ण था।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 11 पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंध (India's Relations with West Asia)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - भारत के लिए पश्चिम एशिया का सामरिक महत्त्व
  - व्यापार और निवेश
- खाड़ी सहयोग परिषद्
  - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध
  - सामरिक संबंध
  - सुरक्षा
- भारत-यूएई द्विपक्षीय संबंध
  - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - सांस्कृतिक संबंध
  - हालिया घटनाक्रम
  - वाणिज्यिक संबंध
  - निवेश
  - सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय संबंध
  - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - हालिया घटनाक्रम
  - आर्थिक सहयोग
  - सांस्कृतिक संबंध
  - सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-इज़रायल द्विपक्षीय संबंध
  - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध
  - रक्षा और सुरक्षा
  - कृषि क्षेत्र में सहयोग
  - अन्य सहयोग
- भारत-फिलिस्तीन द्विपक्षीय संबंध
  - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - फिलिस्तीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण
  - द्विपक्षीय दौरे
  - सांस्कृतिक संबंध
  - द्विपक्षीय व्यापार

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- पश्चिम एशिया से भारत का संबंध सदियों पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता के दिलमुन (आधुनिक बहरीन) के साथ व्यापारिक संबंध थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में पंजाब फारसी साम्राज्य का हिस्सा था। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, मिस्र के टॉलेमी II और मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य तथा अशोक ने राजदूतों का आदान-प्रदान किया। फारसी मुगल दरबार की भाषा थी, जो 1835 तक भारत की राजभाषा थी। पश्चिम एशिया के साथ भारत का यह संबंध वर्तमान में भी जारी है।
- पश्चिम एशिया भारत के विस्तारित पड़ोस का एक हिस्सा है। इस क्षेत्र में निरंतर शांति और स्थिरता भारत के लिए महत्त्वपूर्ण रणनीतिक हित में है।
- विदेश मंत्रालय का वेस्ट एशिया एंड नॉर्थ अफ्रीका प्रभाग (अल्ज़ीरिया, जिबूती, इज़रायल, मिस्र, लीबिया, लेबनान, मोरक्को, सीरिया, फिलिस्तीन, सूडान, सोमालिया, दक्षिण सूडान, ट्यूनीशिया तथा जॉर्डन) तथा खाड़ी प्रभाग [बहरीन, इराक, कुवैत, ओमान, कतर, यमन, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, खाड़ी सहयोग परिषद् (GCC) तथा आर्गनाईज़ेशन ऑफ इस्लामिक को-ऑपरेशन (OIC)] से संबंधित मामलों को देखता है।
- पश्चिम एशिया की महत्ता के बारे में 2 मार्च, 2016 को पहली रायसीना डायलॉग में सोच में बदलाव करते हुए, तत्कालीन विदेश सचिव डॉ. एस. जयशंकर ने कहा, "यदि पूर्वी मोर्चा लंबे समय से चली आ रही नीति पर निर्माण कर रहा है, तो पश्चिमी मोर्चा अपेक्षाकृत हाल ही में वैचारिक रूप से है..." उन्होंने आगे कहा "कहने के लिए, मैं विश्वास के साथ भविष्यवाणी कर सकता हूँ कि 'एक्ट ईस्ट' का मिलान 'थिंक वेस्ट' से होगा।"
- खाड़ी देशों के साथ हमारे संबंध ऐतिहासिक हैं; भारतीय लोकप्रिय संस्कृति को खाड़ी देशों में लाने के लिए प्रवासी इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- भारत और पश्चिम एशियाई देशों के संदर्भ में जिस प्रकार भारतीय सभ्यता पर अरब का प्रभाव महत्त्वपूर्ण है उसी प्रकार भारत भी अरबों पर अपना प्रभाव डालता है। व्यापार, संस्कृति, धर्म, भाषा, विज्ञान और प्रौद्योगिकियों ने सदियों से भारत और अरब देशों के लोगों को बांधे रखा है।
- 8वीं सदी से ही अरब व्यापारियों का आगमन भारत में होता रहा है जिसमें से अनेक भारत में बस गए और स्थानीय लड़कियों से विवाह कर लिया जिससे केरल के मोप्लाय समुदाय की उत्पत्ति हुई (स्रोत- राजीव सीकरी)।
- एक तरफ जहाँ अरब समुद्री मार्ग से केरल तथा महाद्वीपीय मार्ग से सिंध के माध्यम से इस्लाम को भारत में लाए तो वहीं दूसरी तरफ भारत ने खाड़ी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। न्यूमिसबिंग (Numisbing) के संस्थापक रामकुमार खलीज (टाइम्स अखबार में) के अनुसार, 1957 तक संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, कुवैत, ओमान और कतर में इस्तेमाल की जाने वाली मुद्रा भारतीय रुपया थी; पाकिस्तान के मकरान तट पर स्थित ग्वादर 1958 तक ओमान के कब्ज़े में था।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 12	भारत-यूरोपीय संघ संबंध (India-EU Relations)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत-यूरोपीय संघ संबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- यूरोपीय संघ
- द्विपक्षीय समझौते
- लोगों-से-लोगों के संपर्क
- हालिया घटनाक्रम
- भारत का यूरोप के साथ व्यापार
  - ➤ भारत के विदेश व्यापार (यूरोप) प्रभाग के कार्य
  - ➤ ईयू, ईएफटीए और अन्य यूरोपीय देशों के साथ व्यापार
  - ➤ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
- भारत तथा यूरोपीय क्षेत्र के बीच संबंधों में चुनौतियाँ और संभावनाएँ
  - ➤ भारत-ब्रिटेन संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ भारत और ब्रिटेन के सांस्कृतिक संबंध
  - ➤ शिक्षा और रक्षा क्षेत्र में सहयोग
  - ➤ विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग
  - ➤ आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग
- भारत-फ्राँस द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ भारत-फ्राँस आर्थिक व वाणिज्यिक संबंध
  - ➤ भारत में फ्राँसीसी निवेश
  - ➤ फ्राँस में भारतीय निवेश
  - ➤ रक्षा सहयोग
  - ➤ अंतरिक्ष सहयोग
  - ➤ असैन्य परमाणु सहयोग
  - ➤ विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग
  - ➤ सामाजिक सुरक्षा पर समझौता
  - ➤ भारत-फ्राँस सहयोग के अन्य क्षेत्र

यूरोपीय संघ (The European Union)

- यूरोपीय संघ (EU) 27 देशों का एक आर्थिक और राजनीतिक संघ है। यह एक एकल बाज़ार संचालित करता है जो सदस्य राज्यों के बीच माल, पूंजी, सेवाओं और लोगों की मुक्त आवाजाही की अनुमति देता है।
- यूरोपीय संघ मास्ट्रिच संधि (Maastricht Treaty) द्वारा बनाया गया था, जो 1 नवंबर, 1993 को लागू हुआ।
- यूरोपीय संघ में शामिल सदस्य देश हैं– ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, बुल्गारिया, क्रोएशिया, साइप्रस गणराज्य, चेक गणराज्य, डेनमार्क, एस्टोनिया, फिनलैंड, फ्राँस, जर्मनी, ग्रीस, हंगरी, आयरलैंड, इटली, लातविया, लिथुआनिया, लक्ज़मबर्ग, माल्टा, नीदरलैंड, पोलैंड, पुर्तगाल, रोमानिया, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, स्पेन और स्वीडन।
- यूरोपीय आर्थिक क्षेत्र (EEA) में यूरोपीय संघ के देश और आइसलैंड, लिकटेंस्टीन और नॉर्वे भी शामिल हैं। यह उन्हें यूरोपीय संघ के एकल बाज़ार का हिस्सा बनने की अनुमति देता है।
- स्विट्ज़रलैंड यूरोपीय संघ या EEA सदस्य नहीं है लेकिन एकल बाज़ार का हिस्सा है। अर्थात् स्विस नागरिकों के पास यूके में रहने और काम करने के समान अधिकार हैं जो अन्य EEA नागरिकों के पास हैं।
- यूरोप में शांति और लोकतंत्र को बढ़ावा देने के संगठन के प्रयासों की मान्यता में, यूरोपीय संघ को वर्ष 2012 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
- भारत-यूरोपीय संघ के संबंध वर्ष 1960 के दशक की शुरुआत से हैं। भारत, यूरोपीय आर्थिक समुदाय के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने वाले पहले देशों में से एक है।
- वर्ष 1994 में हस्ताक्षरित एक सहयोग समझौते ने द्विपक्षीय संबंधों को व्यापार व आर्थिक सहयोग में वृद्धि किया।
- भारत और यूरोपीय संघ के बीच पहला उच्च स्तरीय शिखर सम्मेलन जून 2000 में लिस्बन में हुआ, जो सार्थक द्विपक्षीय संबंधों की वास्तविक शुरुआत को चिह्नित करता है। इसके बाद वर्ष 2005 में दोनों पक्षों के बीच रणनीतिक साझेदारी की शुरुआत हुई।
- इसके अलावा भारत और यूरोपीय संघ विदेश मंत्रियों के स्तर पर नियमित रूप से बातचीत करते हैं ।
- संयुक्त कार्य योजना के तहत परिकल्पित एक सुरक्षा वार्ता मई 2006 से प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है।
- भारत और EU के बीच आतंकवाद विरोधी, साइबर सुरक्षा, काउंटर-पाइरेसी, परमाणु प्रसार और निशस्त्रीकरण के साथ-साथ सुरक्षा वार्ता की छत्रछाया में एक संवाद स्थापित करने पर उल्लेखनीय प्रयास किए गए हैं।
- मानवाधिकारों पर एक वार्षिक भारत-यूरोपीय संघ तदर्थ संवाद (India-EU Ad-hoc Dialogue) नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है और कांसुलर मुद्दों (Consular Issues) पर दिल्ली स्थित एक संयुक्त कार्य समूह भी है।
- जुलाई 2012 को नई दिल्ली में प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय और गृह मामलों के महानिदेशक के बीच सचिव स्तर पर प्रवासन और गतिशीलता पर एक उच्च स्तरीय संवाद स्थापित किया गया है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 13	भारत-अफ्रीका संबंध (India-Africa Relations)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत-अफ्रीका संबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- अफ्रीका का सामरिक महत्त्व
- भारत और अफ्रीका के बीच सहयोग के क्षेत्र
  - ➤ फोकस अफ्रीका कार्यक्रम
- भारत अफ्रीका वाणिज्यिक संबंध
- निवेश
- भारत तथा अफ्रीका संबंधों में चुनौतियाँ व संभावनाएँ
- भारत-दक्षिण अफ्रीका संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ सांस्कृतिक संबंध
  - ➤ वाणिज्यिक और आर्थिक संबंध
  - ➤ रक्षा सहयोग
  - ➤ विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग
  - ➤ कौशल विकास
- भारत-सेशेल्स द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और राजनयिक जुड़ाव
  - ➤ व्यापार और निवेश
  - ➤ सांस्कृतिक संबंध
  - ➤ रक्षा और सुरक्षा सहयोग
  - ➤ भारत तथा सेशेल्स के बीच सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-मॉरीशस द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ वाणिज्यिक संबंध
  - ➤ भारत तथा मॉरीशस के बीच सहयोग के अन्य क्षेत्र
- भारत-मोज़ाम्बिक द्विपक्षीय संबंध
  - ➤ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
  - ➤ आर्थिक संबंध
  - ➤ सामुदायिक और सांस्कृतिक संबंध
  - ➤ मोज़ाम्बिक के साथ भारत की विकास साझेदारी
  - ➤ भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद के बारे में
  - ➤ IADD के उद्देश्य

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

- भारत और अफ्रीका के बीच ऐतिहासिक, व्यापारिक और राजनीतिक संबंध हैं जो 20वीं सदी में उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष के दौरान और मज़बूत हुए।
- अफ्रीका के साथ भारत का जुड़ाव हमारे प्रधानमंत्री के शीर्ष 10 मार्गदर्शक सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है, जिसे 2018 में युगांडा की संसद में उनके संबोधन के दौरान प्रतिपादित किया गया था।
- अफ्रीका के विकास का समर्थन करने के लिए डिजिटल क्रांति के साथ भारत के अनुभव को साझा करना सिद्धांतों में से एक है इसके अलावा, भारत सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में सुधार, अफ्रीका में शिक्षा का विस्तार और डिजिटल साक्षरता के प्रसार में भी सहयोगी की भूमिका में है।
- पूर्वी अफ्रीका के समुद्रतटीय देशों के साथ भारत का व्यापारिक संबंध था किंतु, औपनिवेशिकरण के दौर में इन संबंधों में कमी आई क्योंकि भारतीय नीतियाँ भी औपनिवेशिक हितों से होने लगी थी।
- औपनिवेशिक युग में बड़ी संख्या में भारतीय कारीगरों व श्रमिकों को अफ्रीका लाया गया जिससे भारत अफ्रीका संबंधों को नया मोड मिला।
- रंगभेद के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद करने के साथ महात्मा गांधी भारत-अफ्रीका संबंधों के पथ प्रदर्शक साबित हुए।
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से एशियाई व अफ्रीकी देशों में विचारात्मक एकता को बढ़ाने में जवाहरलाल नेहरू ने अद्वितीय भूमिका निभाई।
- शीतयुद्ध के बाद भारत द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाए जाने के बाद अफ्रीकी देशों के साथ संबंधों को नई दिशा देने का प्रयास किया गया।
- अफ्रीका के अपार ऊर्जा संशाधन से भारत के राष्ट्रीय हितों की पूर्ति तथा पूर्वी-अफ्रीका के समुद्रतटीय देशों की अवस्थिति भारत की सामरिक आवश्यकता से मेल खाती है जो भारत के लिए इस क्षेत्र में आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

अफ्रीका का सामरिक महत्त्व (Strategic Importance of Africa)

- पूर्वी-अफ्रीका के समुद्रतटीय देशों की अवस्थिति भारत के राष्ट्रीय हितों व सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है।
- अफ्रीका के पास समृद्ध ऊर्जा संशाधन मौजूद हैं जिसके प्रति चीन का आकर्षण तथा अफ्रीकी क्षेत्र में चीन द्वारा अधिक मात्रा में धन निवेश किया जाना भारतीय हितों के अनुरूप नहीं है।
- अफ्रीकी क्षेत्र भारतीय कंपनियों के लिए एक बाज़ार के रूप में भी अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति रखता है।
- इस क्षेत्र के साथ भारत का व्यापक समुद्री हित जुड़ा हुआ है; समुद्री डकैतियों जैसी घटनाओं से उत्पन्न चुनौतियाँ भारतीय हितों को प्रभावित करती हैं।
- अफ्रीकी देशों में बढ़ती आतंकवादी गतिविधि तथा ड्रग तस्करों से उनका गठजोड़ निश्चित रूप से न सिर्फ भारत को प्रभावित करेगा बल्कि, इसका अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव भी पड़ेगा।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 14	भारत-ब्राज़ील संबंध (India-Brazil Relations)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारत–ब्राज़ील संबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- भारत तथा ब्राज़ील के बीच संस्थागत तंत्र
- भारत तथा ब्राज़ील के बीच सांस्कृतिक सहयोग
  - ➤ व्यापार और निवेश
  - ➤ कृषि, खाद्य प्रसंस्करण और पशुपालन में सहयोग
  - ➤ तकनीकी सहयोग और छात्रवृत्ति
  - ➤ विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग
  - ➤ जैव ऊर्जा में सहयोग
  - ➤ रक्षा और सुरक्षा सहयोग
  - ➤ भारत तथा ब्राज़ील के बीच सहयोग के अन्य क्षेत्र

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

- वास्को डी गामा के भारत पहुँचने के दो साल बाद पेड्रो अल्वारेस कैब्रल एक पुर्तगाली खोजकर्ता वर्ष 1500 में ब्राज़ील के पूर्वी तट पर पहुँचा।
- 16वीं और 18वीं शताब्दी के बीच ब्राज़ील तथा गोवा, पुर्तगाली साम्राज्यवादी साम्राज्य की दोनों चौकियों के बीच द्विपक्षीय आदान-प्रदान हुआ, जो भोजन और पोशाक के साथ-साथ स्थानीय परंपराओं में भी परिलक्षित होता है।
- हमारे द्विपक्षीय संबंधों का एक और उल्लेखनीय, लेकिन अपेक्षाकृत अज्ञात पहलू यह है कि ब्राज़ील के अधिकांश मवेशी भारतीय मूल के हैं।
- ब्राज़ीलियाई टेली-उपन्यास की लोकप्रियता, जिसे 'कैमिन्हो दास इंडियास (भारत के पथ)' कहा जाता है, ने ब्राज़ील की जनता के मन में भारत के बारे में जागरूकता बढ़ाने में काफी प्रभाव डाला।
- वर्ष 1948 में भारत तथा ब्राज़ील के बीच राजनयिक संबंध स्थापित हुए तथा दोनों देशों ने एक ही वर्ष में दूतावास भी खोले।
- भारत का साओ पाउलो (Sao Paulo) में एक महावाणिज्य दूतावास है जबकि ब्राज़ील का एक महावाणिज्य दूतावास मुंबई में है। भारत ने बाद में वर्ष 1971 में अपने दूतावास को रियो से ब्रासीलिया स्थानांतरित कर दिया। इसके अलावा लैटिन अमेरिका में भारत का पहला सांस्कृतिक केंद्र मई 2011 में साओ पाउलो में खुला।
- भारत और ब्राज़ील एक करीबी और बहुआयामी संबंध साझा करते हैं जो साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और अनेक वैश्विक मुद्दों पर विचारों के अभिसरण पर आधारित हैं।
- दोनों देश न केवल द्विपक्षीय रूप से बल्कि BRICS, IBSA, G-20 जैसे बहुपक्षीय मंचों और संयुक्त राष्ट्र और विश्व व्यापार संगठन (WTO) जैसे बहुपक्षीय निकायों में भी सहयोग करते हैं। 2006 में भारत-ब्राज़ील संबंधों को एक रणनीतिक साझेदारी के रूप में उन्नत किया गया, जिससे द्विपक्षीय संबंधों में एक नए चरण की शुरुआत हुई।
- भारत तथा ब्राज़ील के बीच यात्राओं के नियमित उच्च स्तरीय आदान-प्रदान ने बढ़ते संबंधों को निरंतर गति प्रदान किया है।
- ब्राज़ील के साथ भारत के संबंध पिछले एक दशक में विभिन्न उच्च-स्तरीय आदान-प्रदानों के साथ बढ़े हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जून 2019 को ओसाका में G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति बोल्सोनारो से मुलाकात की, इसके बाद नवंबर 2019 को ब्रासीलिया में 11वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान बैठक किया।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निमंत्रण पर, राष्ट्रपति बोल्सोनारो ने जनवरी 2020 में भारत की राजकीय यात्रा किया। वह 26 जनवरी, 2020 को भारत के गणतंत्र दिवस परेड में मुख्य अतिथि थे तथा उनके साथ एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी था जिसमें आठ मंत्री, चार संसद सदस्य, ब्राज़ील सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और व्यापारिक समुदाय के सदस्य शामिल थे।

भारत तथा ब्राज़ील के बीच संस्थागत तंत्र (Institutional Mechanism between India and Brazil)

- सामरिक भागीदारों के रूप में, भारत और ब्राज़ील के पास अपने द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं के समन्वय के लिए अनेक संस्थागत तंत्र हैं।
- इसमें संयुक्त आयोग की बैठक (विदेश मंत्री स्तर), सामरिक वार्ता (NSA), विदेश कार्यालय परामर्श (सचिव), व्यापार निगरानी तंत्र (TMM), आर्थिक और वित्तीय वार्ता, कांसुलर और गतिशीलता मुद्दों पर संवाद, संयुक्त रक्षा आयोग, संयुक्त समिति शामिल हैं।

भारत तथा ब्राज़ील के बीच सांस्कृतिक सहयोग (Cultural Cooperation between India and Brazil)

- जनवरी 2020 में राष्ट्रपति बोल्सोनारो की भारत की राजकीय यात्रा के दौरान वर्ष 2020-2024 के लिए एक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (CEP) पर हस्ताक्षर किए गए।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 15	प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठन (Major International Organizations)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संगठन तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- अंतर्राष्ट्रीय संस्थान
- संयुक्त राष्ट्र प्रणाली
- संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसियाँ
- संयुक्त राष्ट्र के संबंधित संगठन
- संयुक्त राष्ट्र के कार्य
- अंतर्राष्ट्रीय कानून/विधियों को यथावत बनाए रखना
- संयुक्त राष्ट्र के समक्ष चुनौतियाँ
- संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का योगदान
- भारत और सुरक्षा परिषद्
- विश्व व्यापार संगठन
- विश्व व्यापार संगठन का विवाद निपटान प्रक्रिया
- विश्व व्यापार संगठन के मुक्त व्यापार के सिद्धांत
- मुक्त व्यापार के सिद्धांत
- विश्व बैंक
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
- अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय

अंतर्राष्ट्रीय संस्थान (International Institutions)

संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO: United Nations Organization)

संयुक्त राष्ट्र संघ वर्ष 1945 में स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता वर्ष 1945 के 51 मूल संस्थापक सदस्य राष्ट्रों से बढ़कर वर्तमान में 193 सदस्य राष्ट्रों तक हो गई है। संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश महासभा के सदस्य हैं। सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर महासभा के निर्णय द्वारा राज्यों को सदस्यता प्रदान किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र और इसके कार्य इसके चार्टर में निहित उद्देश्यों और सिद्धांतों द्वारा निर्देशित हैं।

संयुक्त राष्ट्र का चार्टर

- संयुक्त राष्ट्र का चार्टर संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक दस्तावेज़ है। यह 26 जून, 1945 को सैन फ्रैँसिस्को में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के समापन अवसर पर हस्ताक्षरित किया गया था और 24 अक्टूबर, 1945 को लागू हुआ। संयुक्त राष्ट्र अपने अद्वितीय अंतर्राष्ट्रीय चरित्र और अपने चार्टर में निहित शक्तियों के परिणामस्वरूप वैश्विक मुद्दों पर कार्रवाई कर सकता है। चार्टर को एक अंतर्राष्ट्रीय संधि माना जाता है। संयुक्त राष्ट्र चार्टर अंतर्राष्ट्रीय कानून का एक साधन है, और संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्य इससे आबद्ध हैं। संयुक्त राष्ट्र चार्टर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख सिद्धांतों को संहिताबद्ध करता है। राज्यों की संप्रभु समानता की स्थापना से लेकर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में बल के प्रयोग के निषेध तक यह चार्टर अंतर्राष्ट्रीय मानक तय करता है। वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के बाद से, संघ के मिशन और संघ के कार्यों को इसके संस्थापक चार्टर में निहित उद्देश्यों और सिद्धांतों द्वारा निर्देशित किया गया है। इस चार्टर को वर्ष 1963, 1965 और 1973 में तीन बार संशोधित किया गया है।
- संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुसार संयुक्त राष्ट्र के निम्नलिखित 7 उद्देश्य हैं–

1. संगठन अपने सभी सदस्यों की संप्रभु व समानता के सिद्धांत का आदर करेगा।
2. सभी सदस्य, वर्तमान चार्टर के अनुसार उनके द्वारा ग्रहण किए गए दायित्वों को सद्भावपूर्वक पूरा करेंगे।
3. सभी सदस्य अपने अंतर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाएंगे,जिससे कि अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और न्याय खतरे में न पड़े।
4. सभी सदस्य अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में किसी भी राज्य की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ या संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों के साथ असंगत किसी भी तरह से बल के प्रयोग से बचने का प्रयास करेंगे।
5. जिस देश के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र निवारक या प्रवर्तन संबंधी कार्रवाई कर रहा है, उस देश को कोई भी सदस्य सहायता नहीं देगा।
6. संयुक्त राष्ट्र इस बात का प्रयास करेगा की जो देश इस संगठन के सदस्य नहीं हैं वे भी चार्टर के सिद्धांतों के अनुसार आचरण करेंगे
7. किसी देश के आतंरिक मामलों में संयुक्त राष्ट्र हस्तक्षेप नहीं करेगा

- महासचिव संयुक्त राष्ट्र का मुख्य प्रशासनिक अधिकारी होता है और यह संगठन के आदर्शों का प्रतीक है और दुनिया के सभी लोगों विशेष रूप से गरीबों और कमज़ोर लोगों के लिए एक सहायक के रूप में स्थापित है। महासचिव की नियुक्ति महासभा द्वारा सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर 5 वर्ष के कार्यकाल के लिए की जाती है, जो कि पुन: निर्वाचन के योग्य होता है। वर्तमान महासचिव पुर्तगाल के एंटोनियो गुटेरेस हैं, जिन्होंने 1 जनवरी, 2017 को पदभार ग्रहण किया। 18 जून, 2021 को गुटेरेस को दूसरे कार्यकाल के लिए फिर से नियुक्त किया गया। उन्होंने विश्व को कोविड-19 महामारी से बाहर निकालने में मदद करना जारी रखने एवं अन्य वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए अपनी प्रतिबद्धता को सुनिश्चित किया है।

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

जहाँ एक नहीं, हर शिक्षक है श्रेष्ठ

देश में हिंदी माध्यम से
सामान्य अध्ययन की सर्वश्रेष्ठ टीम

सामान्य अध्ययन

- फाउंडेशन कोर्स (प्रिलिम्स + मेन्स)
- प्रत्येक माह नया बैच आरंभ
- हाइब्रिड कोर्स ऑफलाइन + ऑनलाइन

SPECIAL OFFER
9555 124 124

दिल्ली एवं प्रयागराज

इतिहास
वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

भूगोल
वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री कुमार गौरव

वैकल्पिक विषय
कार्यक्रम विशेषताएँ

- इतिहास और भूगोल में मानचित्र द्वारा अध्ययन के लिए वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग
- क्लास के तुरंत बाद प्रत्येक विद्यार्थी की विषय संबंधी शंकाओं का निवारण
- प्रत्येक विद्यार्थी की पर्सनल मेंटरिंग व टेस्ट का मूल्यांकन फैकल्टी द्वारा
- मुख्य परीक्षा में पूछे गए विगत 25 वर्षों के प्रश्नों का उत्तर लेखन अभ्यास

GS EXTENSIVE COURSE Prelims + Mains
- लगभग 650 कक्षाओं का एक्स्टेंसिव स्टडी प्रोग्राम
- AI द्वारा समर्थित अध्यापन प्रविधि का प्रयोग
- प्रत्येक टॉपिक का बेसिक से एडवांस लेवल तक कवरेज

INDIVIDUAL MENTORING
- शॉर्ट नोट्स और सिनॉप्सिस बनाने का प्रशिक्षण
- उत्तर लेखन में सुधार के लिए पर्सनल गाइडेंस
- स्टडी इम्प्रूवमेंट के लिए वन-टू-वन सेशन

PGP PRELIMS GUIDANCE Programme
- प्रत्येक टॉपिक के लिए महत्त्वपूर्ण करेंट अफेयर्स सिनॉप्सिस
- विगत 13 वर्षों के PYQs में पैटर्न के अनुरूप संपूर्ण पाठ्यक्रम का रिवीज़न

PCS COURSES
- UPPCS फाउंडेशन कोर्स
- BPSC फाउंडेशन कोर्स
- MPPCS फाउंडेशन कोर्स
- RAS फाउंडेशन कोर्स
- UP-RO/ARO

MMP MAINS MENTORSHIP Programme
- संस्कृति IAS की कोर फैकल्टी द्वारा Daily पर्सनल मेंटरिंग की सुविधा
- चारों प्रश्नपत्रों पर आधारित 70 टेस्ट का Intensive Test Programme

IGP INTERVIEW GUIDANCE Programme
- एक्सपर्ट के साथ वन-टू-वन सेशन
- DAF एनालिसिस एक्सपर्ट के साथ सीधा संवाद
- इंटरव्यू पैनल द्वारा मॉक इंटरव्यू सेशन्स

CSAT COURSE
- गणित और रीज़निंग का बेसिक से एडवांस लेवल तक Step-by-Step अध्यापन
- कॉम्प्रिहेंशन के प्रश्नों को सटीक और त्वरित ढंग से हल करने के लिए डायनमिक मेथडलॉजी

NCERT COURSE
- प्रत्येक विषय की कक्षा 6 से 12 तक की NCERT पर कक्षानुसार लैक्चर
- NCERT पर आधारित प्रिलिम्स और मेन्स के प्रश्नों पर चर्चा

QAD PROGRAMME
- GS के सभी टॉपिक्स के विगत वर्षों के PYQs पर विस्तृत प्रश्नोत्तर चर्चा
- प्रिलिम्स परीक्षा में जटिल प्रश्नों को सुगमता से हल करने में सक्षम बनाना

CURRENT AFFAIRS Programme
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के समसामयिक घटनाक्रमों का विस्तृत कवरेज
- फैकल्टी द्वारा समसामयिक घटनाक्रमों का विषयवार डिस्कशन

Mode of Courses
- Hybrid Course — Offline Classroom & Online Live Stream
- Offline Classroom
- Online Live Stream — 3 साल तक Mobile App पर वीडियो लैक्चर देखने की सुविधा

हेड ऑफिस: 636, भू-तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
प्रयागराज केंद्र: महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

sanskritiias.com
Follows us: YouTube